दिया गया. इसका विरोध किया गया तथा १८८१ ई. में इसे वापस लेना पड़ा।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी प्रथम भारतीयों में से एक थे जो पत्रकारिता के लिए जेल गए बालगंगाधर तिलक अनेक बार जेल केवल इसलिए गए क्योंकि वे उग्र पत्रकार थे. तिलक के जेल जाने से भारतीय जनता में रोष व्याप्त हो गया और जगह–जगह विद्रोह की आवाज़ गूँज उठी। इससे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा मिली।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के कुछ समय बाद ही सरकार का रवैया नरमपंथी नेताओं के खिलाफ हो गया. लॉर्ड डफरिन राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा बदलना चाहता था इसीलिए उसने हूम को निर्देश दिया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राजनीति की तरफ ध्यान न देकर अपना ध्यान सामाजिक कल्याण की ओर लगाए. परन्तु राष्ट्रीय नेताओं ने लॉर्ड डफरिन के इस विचार को दरकिनार कर दिया। अत: अब सरकारी अफसर खुलकर उदारवादी नरमपंथी नेताओं और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आलोचना करने लगे। १८८७ ई. में लॉर्ड डफरिन ने कांग्रेस पर प्रहार करते हुए इसे Microscopic Minority of the People. कहा भारत सचिव हेमिल्टन तो दादाभाई नौरोजी को गाली देने पर उतर आया. ब्रिटिश अधिकारियों ने राष्ट्रीय नेताओं को तरह–तरह की संज्ञाओं जैसे 'Disloyal Babus', 'Seditions Brahmins', 'Violent Villainons' से विभूषित किया, और कांग्रेस को 'Factory of Seditio' घोषित किया।

संदर्भ सूची :

१. चन्द्र, विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, १९९८, पृ. ७६

२. ग्रोवर, बी. एल. आधुनिक भारत को इतिहास, एस. चन्द कम्पनी प्रा. लि. नई दिल्ली, २००८, पृ. ३००–३०४

३. वर्मा, डॉ. दीनानाथ, आधुनिक भारत, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१४

४. तिवारी, नित्यानन्द, आधुनिक भारत का इतिहास, एकसिलेंट बुक, नई दिल्ली, पृ.७९–८३

५. प्रतियोगिता दर्पण अतिरिक्तांग, २०१६, आधुनिक भारत का इतिहास

28

'छत्तीसगढ़ी लोक गाथाओं में अभिव्यक्त–''राम''

डॉ. श्रीदेवी चौबे

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,

बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जिला–धमतरी (छ.ग.)

ऋचा शुक्ला

शोधार्थी,

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भूमिका:–

नवोदित राज्य छत्तीसगढ़। मध्यप्रदेश के दक्षिण–पूर्वी भू–भाग को छत्तीसगढ़ कहा जाता है। छत्तीसगढ़ पुरातन समय से अपने अनेक नामों तथा अपनी विशिष्ट सभ्यता और संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। वर्तमान भू–भाग तीन भू–भागों में फैला हुआ है। पहला दक्षिण में बस्तर जिसका एक भू–भाग अबुझमाड़ कहलाता है। दूसरा मध्य का मैदानी भाग, तीसरा उत्तर का सरगुजा क्षेत्र। लेकिन छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम कोसल (दक्षिण कोसल) था। कोसल नाम संस्कृत शब्द कुशल अर्थात प्रसन्नता का पर्याय है। कोसल का उल्लेख रामायण में भी आता है। इससे यह सिद्ध होता है कि छत्तीसगढ़ का अस्तित्व त्रेता युग में भी था।

लोक मान्यताओं के अनुसार इसी छत्तीसगढ़ में माता कौशल्या और सुमित्रा का मायका था और, श्रीराम का ननिहाल। यह रामायण कालीन अनेक ऋषिमुनियों की कर्मभूमि थी। अगस्तय, जमदग्नि, वशिष्ठ मुनि श्रृंगी ऋषि आदि का आश्रम था तथा रामायण के रचयिता राम के समयुगीन महर्षि वाल्मीकि का आश्रम रायपुर के निकट तुरतुरिया में था। यह भी मान्यता है कि राम ने चौदह वर्षों के वनवासकाल में से बारह वर्ष छत्तीसगढ़ में व्यतीत किए। रामचरितमानस के पूर्व ही लोकसाहित्य में श्रीराम से संबंधित कथाएँ लोकप्रिय थी। छत्तीसगढ़ अंचल में लगभग नौ–दस लोकगाथाएँ रामचरित, रामकथा से संबंधित है, जिसमें रामायण से संबंधित विभिन्न पात्रों को रोचक घटनाओं के माध्यम से वर्णित किया गया है। छत्तीसगढ़ राम का ननिहाल होने के कारण राम को अवतारी पुरुष के अलावा भाँजा माना गया है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ी लोक गाथाओं में एवं रामायण से संबंधित पात्रों को अवतारी न मानकर एक सामान्य मानव के रुप में चित्रित किया गया है। इन लोकगाथाओं में छत्तीसगढ़ समाज की संस्कशति, खानपान, रहन–सहन, रीतिरिवाज, संस्कार का व्यापक वर्णन मिलता है।

लोकगाथाओं में अभिव्यक्त राम के रुप:–

छत्तीसगढ़ लोकगाथा सरवन में श्रवण कुमार की कथा भी शामिल है जिसमें श्रवण कुमार की पत्नी को एक कर्कशा नारी के रुप में चित्रित किया गया है जो अपने अंधे सास–ससुर से दुरव्यवहार करती है एवं बहुत चिढती है। किन्तु पति के भय से उनकी सेवा का नाटक करती है पति को इसकी जानकारी न हो इसलिए वह चुपके से कुम्हार के पास जाती है और दो मुँह वाली हाँड़ी बनवाती है। जिसमें एक भाग में वह खीर और दूसरे भाग में महेरी बनाती है पति को खीर खिलाती और सास–ससुर को मेहरी परोसा करती थी। छत्तीसगढ़ी लोकगाथा में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है:

मोर बर हंडिया गढ़ई देबे
पइसा के लोभी कुम्हरा भइया
एक हड़िया के दुइ खंड बनइ देने
एक मोहडा एक परइ लगा देबे
एक में चुरै खटटा महेरी
अउ एक में निरमल खीर
अंधवा ल देथे निरमल खीर
अंधवा ल देथे खट्टा मेहरी
सखा ला निरमल खीर।

जब श्रवण कुमार को इस सच्चाई का पता चलता है तो वह पत्नी को घर से निकाल देता है और अपने अंधे माता–पिता को कांवर में लेकर तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़ता है। जहाँ मार्ग में राजा दशरथ के शब्दभेदी बाण से श्रवण मारा जाता है। उसकी मृत्यु से दुखित एवं क्रोधित माता–पिता राजा दशरथ को श्राप दे देते है। लोकगाथाओं की मान्यता के अनुसार वह श्राप राजा दशरथ के लिए वरदान बन जाता है। क्योंकि उस समय तक राजा दशरथ का कोई संतान नही था और श्राप के कारण ही राजा को चौथेपन में चार पुत्रों की प्राप्ति हुई।

दूसरी लोकगाथा में गंगावतरण की कथा है जो दो तरह से है। एक भगवान कृष्ण से एवं दूसरी राम से संबंधित है। भगवान राम गंगावतरण के संबंध में ऋषि विश्वामित्र से पूछते है। विश्वामित्र कहते है कि हे! राम तुम्हारे कुटी में सगर नामक सम्राट थे। उनकी दो रानियाँ थी केशनी और समुति। समुति के पुत्र का नाम असमंजस था। केशनी नि:संतान थी। पुत्र कामना से इसने भगवान शिव की तपस्या की। फलत: वह गर्भवती हुई और सौ वर्ष पश्चात उसके गर्भ से एक मासपिण्ड की उत्पत्ति हुई। उसने फिर से शिव का ध्यान किया। भगवान शंकर ने प्रकट होकर इस मांसपिण्ड को त्रिशूल से साठ हजार भागों में खंडित कर दिया। वे सभी पुत्र रुप में बदल गये। कुछ समय पश्चात राजा सगर ने सौ अश्वमेघ यज्ञ करने का संकल्प लिया। जब निन्यान्बे यज्ञ पूर्ण हो चुके और सौवा यज्ञ पूर्ण करने हेतु राजा सगर ने श्याम वर्ण अश्व छोड़ा। इन्द्रासन छिन जाने के डर से इन्द्र ने अश्व को चुराकर कपिल मुनि के आश्रम में बाँध दिया। राजा सगर साठ हजार पुत्रों के साथ अश्व को खोजते हुए कपिल मुनि के आश्रम पहुंचे। मुनि का अपमान करने के कारण कपिल मुनि ने श्राप से राजा सगर के सभी पुत्रों को नष्ट हो गये। दुखित राजा सगर ने फिर अपने नाती असमंजस को अश्व की खोज में भेजा जो गरुड़ जी के सहयोग से कपिल मुनि के आश्रम से यज्ञ के अश्व को छुड़ाकर लाया। यज्ञ पूर्ण होने के बाद राजा सगर अपने पुत्रों के उद्धार हेतु गंगा की पश्थ्वी पर लाने तपस्या करने लगे। राजा सगर के बाद उनका पुत्र अंशुमान फिर राजा दिलीप और भागीरथ ने इस उद्देश्य हेतु कठिन तपस्या किए। तपस्या से ब्रम्हा और शिव को प्रसन्न

[illegible] लोकगाथा की कथा [illegible] है।

[illegible] छत्तीसगढ़ में प्रचलित शबरी की लोकगाथा [illegible] शबरी के नाम से छत्तीसगढ़ भी अत्यधिक लोकप्रिय है। शबरी नारायण यहाँ स्थित [illegible] है। लोक गाथा के अनुसार [illegible] मुनि की कृपा से पुत्री की प्राप्ति हुई। जिसका नाम शबरी रखा गया। शबरी बचपन से ही पूजा–अर्चना करती एवं धार्मिक थी। उसके विवाह के अवसर पर राजा बाहुक पशुओं की बलि की व्यवस्था करने को कहते हैं। शबरी विचार करती है कि पशुबलि से मैं व्यर्थ ही पाप की भागी बनूँगी। इससे अच्छा है कि मैं विवाह ही न करूं। यह सोच कर वह घर से निकल जाती है और वन में मतंग ऋषि की शिष्या बनकर ऋषि–मुनियों की सेवा करती। एक दिन मतंग ऋषि शबरी को बुलाकर कहा कि मेरे मृत्यु के पश्चात तुम कुटिया में ही रहना क्योंकि आगे प्रभु रामावतार में यहीं तुम्हें दर्शन देंगे। मतंग ऋषि के मृत्यु पश्चात उनके सभी शिष्य अन्यत्र चले गये। शबरी गुरु आज्ञा को मानते हुए प्रभु की प्रतीक्षा में वहीं रह गई। अंततः भगवान प्रभु भाई लक्ष्मण सहित शबरी के आश्रम पहुँचे। शबरी धन्य हो गई। खुशी के मारे वह समझ ही नही पाई कि प्रभु का स्वागत कैसे करे? फिर वह जंगल से लाये बेर को चख–चखकर प्रभु को खिलाने लगी। कहीं खट्टे बेर प्रभु के मुँह का स्वाद ना बिगाड़ दे। प्रभु ने शबरी के हाथों जुठे बेर खाये। भगवान राम ने शबरी को नवधा भक्ति की शिक्षा दी। संबंधित लोकगाथा की कुछ पंक्तियाँ–

भक्ति न सुन कान लगाइके, नाता भक्ति बिना,
मोरों नइये कुछ काम के जी।
जात–पात, धरम धन बल, जन नइये काम के जी,
नवधा भगति से बतावो सुन कान लगाये।

छत्तीसगढ़ में एक अन्य लोकगाथा फूलवासन के नाम से प्राप्त होती है। इस लोकगाथा का रामचरित से कोई संबंध नही अपितु यह लोकमानस की उपज है। इस लोकगाथा के अनुसार माता सीता एक रात स्वप्न में देखती है कि लक्ष्मण जी उन्हे विचित्र भोग [illegible] रहे है, जिसमें बिना [illegible] बिना फूटे बाँस का पानी, हरी मूंग, [illegible] और मक्खी के दूध को [illegible] मिले हुए [illegible] से परोस रहे है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सीताजी अनेक लोगों से इस पहेली का अर्थ/राज पूछते है किन्तु कोई नही बता पाता। अंत में अपने वृद्धा मालिन रनबारी से पूछती है। मालिन पहेली का रहस्य बताते हुए कहती है– बिना फूटे बाँस का पानी अर्थात ओस बिना जुते खेत का अन्न अर्थात पसहर चावल, हरे मूँग की दाल अर्थात मुंगिया, भरवा का लासा अर्थात गुड़, मक्खी का दूध अर्थात मधुरस पलपला में भोजन पकाना गर्म रेत मे तथा बिना सिली पातल अर्थात पुरईन पत्ता। मालिन सीताजी को स्वप्न का भेद बताते हुए फूलवासन के रहस्य को उजागर करती है यहाँ से दूर एक जंगल में बीच में एक सरोवर है जहाँ शेष रात्रि में सात कन्याएं स्नान करने आती है तथा सरोवर के बीच में जाकर फूल बन जाती है। उसमें सबसे छोटी कन्या का नाम फूलवासन है। लक्ष्मण जी द्वारा उस फूलवासन से विवाह करने पर ही तुम्हारा स्वप्न का फल पूरा होगा। माता सीता उन्हें वहाँ बुलाकर स्वप्न की बात बताती है। फूलवासन को लाने का आग्रह करती है। लक्ष्मणजी माता सीता की आज्ञा को मानते हुए फूलवासन की खोज में निकल पड़ते है। भाई अनेक बाधाओं संकटों का सामना करते हुए वे वर्षो से तपस्यारत एक मुनि के पास पहुँचते है। यही मुनि लक्ष्मण को सरोवर का पता बताते है। वहां जाकर लक्ष्मणजी मुनि द्वारा बतलाये गये विधि अनुसार फूलवासन को प्राप्त करते है और फूलवासन को लेकर अयोध्या पहुँचते है। अयोध्या में सब फूलवासन के रुप सौन्दर्य को देखकर मोहित हो जाते है। माता सीता लक्ष्मण से कहती है की फूलवासन से कहो कि वह